अभिलेख

इकाई (III) कक्कुक शिलालेख

Q. कक्कुक के अभिलेख का महत्व परिचय को बताइये?

Ans. कक्कुक शिलालेख भगवान जिननाथ के नमस्कार से प्रारम्भ होता है। कक्कुक का यह अभिलेख भारतीय इतिहास की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जोधपुर से बीस मील उत्तर की ओर घटयाल नामक गाँव में यह शिलालेख स्थित है। भाषा की दृष्टि से भी इसका बहुत महत्व है। यह प्राकृत भाषा में कुल तेईस गाथाओं में अंकित है। इसकी लिपि ब्राह्मी है। वर्णन शैली में यह अशोक एवं खारवेल के अभिलेखों से बिल्कुल भिन्न है, क्योंकि अशोक के अभिलेख मे उनके व्यक्तिगत विचारों की अभिव्यक्ति है और खारवेल के अभिलेख में उसके शासन काल की घटनाओं का वर्णन है जबकि कक्कुक शिलालेख में कक्कुक की वंशावली का सविस्तार वर्णन एवं उसके द्वारा किये गये प्रजा-हित कार्यों तथा उसकी लोकप्रियता के मूल-तत्वों को विशेष रूप से दर्शाया गया है। शिलालेख की तिथि विक्रम सम्वत 1856 सन 861 है

शिलालेख से पता चलता है कि कक्कुक ने एक जैन मंदिर का निर्माण करवाया था। उसने एक बाजार भी लगवाया था। उसने दो कीर्तिस्तम्भ भी स्थापित करवाया था - एक मडोअर में और दूसरा रोहिन्सकूप नामक गाँव में। वट नामक मंडल की भूमि को उपजाऊ बनाया था। इस प्रकार इस अभिलेख के

आधार पर कहा जा सकता है कि उस समय गुजरात, पश्चिमी राजस्थान आदि प्रदेशों में जैनधर्म का प्रचार था और वीतरागी भगवान जिनदेव की पूजा की जाती थी। उस समय प्रतिहार वंश समुन्नति पर था इस अभिलेख से प्रतिहार वंशीय राजा कक्कुक के माता-पिता एवं वंशावली का पूर्ण बोध तो होता ही है साथ ही कक्कुक के व्यक्तिगत गुणों एवं प्रजाप्रिय राजा के चरित का बोध होता है। शासन-प्रणाली एवं प्रजा की खुशहाली और राजा के अमरचारित्र गुणों का प्रतीक है।

यह कक्कुक सभी प्रजा को सम्यक दृष्टि से देखने वाला, प्रजा की भलाई अपनी सन्तान की तरह करने वाला, कृपालु, दानी, न्याय करने वाला एवं दुष्टों को दंडित करनेवाला था। वह बच्चों के लिए गुरु, युवकों के लिए मित्र, वयोवृद्ध के लिए पुत्र के समान था। वह कई सद्गुणों से युक्त था उसके सद्गुणों के प्रति अनुराग अपने देश में ही नही, बल्कि सीमावर्ती प्रदेशों की प्रजा में भी था उसने वट नायक मंडल जो संभवतः जंगली क्षेत्र था, पैदावार भूमि के रूप में परिणत करवाया था।

कक्कु शिलेख। यह बहुत महत्वपूर्ण शिलालेख है।